तित्थयर

|| जैन भवन ||

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २६ अंक : ५
अगस्त २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073 (05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ अंक - ५, अगस्त २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-238-2655. e-mail - jbhawan@cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	१९५
२.	जैन दर्शन में पुनर्जन्म की मान्यता	समणी मंगल प्रज्ञा जी	२०७
३.	जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा	श्री पृथ्वीराज जैन	२१२
४.	पाटलिपुत्र का इतिहास	पं० प्र० यतिश्री सूर्य्यमलजी महाराज	२१६
५.	आत्मा की खुराक – सामायिक		२२४

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दुगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

जैन दर्शन में इस प्रकार का जाति स्मरण ज्ञान, पूर्व जीवन का अनुभव, जीवन परिवर्तन की घटना का वर्णन एकाधिक उपलब्ध है।

आज का विज्ञान इस बात को स्वीकार कर रहा है। स्वीकार ही नहीं बल्कि उसको सार्वजनिक प्रचार करने का भी प्रयत्न किया जा रहा है। आज तो विदेश में कुछ विद्वानों द्वारा बाईबिल और कुरान पर भी संदेह किया जा रहा है, क्योंकि इसमें आत्मा को पूनर्जन्म के रूप में अस्वीकार किया गया है। विश्व में कुछ सम्प्रदाय ऐसे भी है जो आत्मतत्व को अस्वीकार करते है। पर प्रत्यक्ष प्रमाणों से वे इस विषय को खण्डन करने में असमर्थ है। क्योंकि प्रत्यक्ष प्रमाण के विरुद्ध कोई तर्क नहीं दिया जा सकता है।

इस विषय में संशोधन के लिये कुछ वर्ष से भारतीय वैज्ञानिकों के सहयोग से जयपुर (राजस्थान) युनिवर्सिटी में एक पेरासायकोलोजी विभाग प्रारंभ किया गया है। डॉ. एच. एम. बेनर्जी इस विषय में संशोधन कर रहे है। आज तक वे करीब ५०० जातिस्मरण ज्ञान से सम्बन्धित व्यक्तियों से मिल चुके है और जानकारी संग्रह किये है। इसमें देश विदेश की घटना सम्मिलित है।

(१) बालक करीम उल्लाह—बरेला नगर में इकराम अली जमींदार के घर हसमत अली अन्सारी बच्चे को पढ़ाते थे। एक बार शिक्षक महोदय अपने पाँच वर्ष के लड़के करीम को भी जमींदार के घर साथ ले गये। जमींदार के घर पहुँचते ही करीम आनन्द में नाँच उठा। इधर-उधर दौड़ने लगा जमींदार की विधवा पुत्री फातिमा को देखते ही हाथ पकड़ लिया और कहने लगा। अरे— ! फातिमा, तूं यहाँ है? तू तो मेरी बीबी है, यहाँ क्यों आ गई?

अनजान बच्चे से ऐसी बात सुनकर सभी आश्चर्य में पड़ गये। बच्चा ऐसी ऐसी बाते करने लगा, जो फातिमा और उसके पति के सिवाय कोई नहीं जानता था। आज से पाँच वर्ष पूर्व फातिमा के पति फारूक की मृत्यु हुई थी तमाशा देखने के लिये घर के सभी सदस्य एकट्ठा हो गये। बच्चा करीम बोला- मैं पाकिस्तान बासी मेरे भाई को छः हजार रुपया दिया था। तीन हजार बैंक में रखा था। मेरा एक भाई लाहौर में व्यापार करता है। मैं भी वही जाने का विचार रखता था। मेरे एक भाई का नाम उमर आदिल है। मेरे ससुर की बन्दूक चोरी हो गयी थी—— आदि——।

इस प्रकार की बाते सुनकर सभी आश्चर्य में पड़ गये। फातिमा कहती है मैं पुनर्जन्म को नहीं मानती थी पर इस प्रकार के प्रत्यक्ष प्रमाणों से अब अस्वीकार नहीं कर सकती है।

(२) सेठ कृष्ण गोपाल—बरेली में श्री बदामीलाल सक्सेना का चार वर्ष का सुशील नाम का लड़का था। चार वर्ष तक बच्चा बोला नहीं था।

एक बार बदामीलाल सुशील को इशारे में कोई कार्य करने के लिए बोले। सुशील एकाएक चिल्लाया-**मेरे नौकर को बुलाओ, मैं स्वयं कोई कार्य नहीं कर सकता हूँ। पिता आश्चर्य में पड़ गये, एक तो बच्चा जीवन में प्रथमबार बोला, वह भी साधारण व्यक्ति थे, घर में कोई नौकर नहीं था। बच्चे को जब पढ़ने के लिये कहा गया तो बच्चा हठ पकड़ा कि मैं तो अपने स्कूल में ही पढ़ूँगा। उसको समझाया गया कि हम गरीब आदमी है। तुम्हारा स्कूल कहाँ है?**

सुशील बोला—बदायु में मेरे दो स्कूल और एक इन्टर कालेज है। मेरा नाम कृष्ण गोपाल है। प्रिंसीपल डी. पाठक है। बदायुं बच्चे को ले जाने पर सभी बाते सही निकली। सेठ कृष्णगोपाल की अन्य बाते भी सुशील बताये- जैसे कृष्ण गोपाल स्वयं बोल रहे हो। ('दैनिक जनशक्ति')

(३) लंदन के एक छोटे गांव में एक ११ वर्ष की दूसरी छः वर्ष की दो बहने थी। एक बार दोनों बहने रोड के किनारे खेल रही थी, किसी गाड़ी की

चपेट में आकर दोनों बहन घटनास्थल पर ही मर गई। संयोग से वे माता के गर्भ में १० महिना के बाद दोनों पुत्रीरूप में जुड़वां जन्म ली। ४/५ वर्ष की होने के बाद उन दोनों की गति विधियों से पता लगा कि वे दोनों बच्ची वहीं है जो एक घटना में दोनों एक साथ मर गई थी। उनके पिता कहते है कि -- ५ वर्ष की बच्ची को हमारे घर की सभी बातों की जानकारी है। यहां तक कि पूर्वजीवन में दोनों बहने जो कपड़ा पहनती थी वही कपड़े पहनना पसन्द करती थी। जो खिलौना खेलती थी वह भी स्वयं पसन्द करती थी। और उसी से खेलना पसन्द करती थी। इन दोनों की रुचि, स्वभाव, आचरण सभी पूर्ववत् ही पाया गया। बच्ची के पिता पुलोक कहते है कि—मैं रोमन केथोलिक हूँ। पुनर्जन्म को हमारे धर्म में अस्वीकार किया गया है। पर इस घटना के बाद मैं पुनर्जन्म को मानने के लिए बाध्य हूँ। इन सभी घटनाओं की जानकारी जे. बेनर्जी स्वयं घटनास्थल पर जाकर लाये है। डॉ. बेनर्जी ही नहीं अन्य भी अनेक संशोधक वहां पहुँचे और पूर्वजन्म के विषय में अनुभव प्राप्त किये।

दुःख की बात है आज पाश्चात्य मनीषी जब भारतीय विद्यापर विश्वास कर रहे है, तब हम उन अपूर्ण विदेशी वैभव के आकर्षण में पागल हो रहे है। अगर हम अपनी संस्कृति का पुनर्मूल्यांकन करे, तो शायद आज का हमारा सभी संदेह स्वतः नष्ट हो जायेगा।

आत्मा के भेद— वैसे तो मूल रूप में सभी आत्मा एक समान है। इनके मूलभूत गुणों में कोई भेद नहीं है। परन्तु कर्मानुसार आत्मा के अनेक भेद है। जिसमें से यहाँ पर मुख्य भेद बताये गये है।

(१) भव्यात्मा— जिसके अन्दर सुन्दर भावना हो, मुक्त होने की कामना हो, सांसारिक बन्धनों से बचने का प्रयत्न करता हो, हमेशा शुभ कार्य में रत रहता हो, पापकर्मो से भयभीत हो उससे भव्य आत्मा कहते है।

(२) अभव्यात्मा— भव्यात्मा जीव के विपरीत स्थिति वाले जीव को अभव्य आत्मा कहते है।

(३) जाति भव्यात्मा— जिस आत्मा में वास्तविक शुभ भावना तो नहीं होती है, पर परिस्थितिवश कुछ समय के लिये भावना बदलती है। जैसे

– मन्दिर को देखकर भगवान बनने की भावना, चोर को देखकर चोरी करने की भावना होती है। अर्थात परिस्थितिवश भावना को प्रबल न कर पाने की स्थिति को जातिभव्य कहते है।

एक सरल उदाहरण द्वारा इन तीन प्रकार की आत्मा का स्वरूप समझने का प्रयत्न करें।

भव्य— विवाहिता स्त्री है, जो पुत्र जन्म देने की योग्यता वाली है, बह पति का योग प्राप्त करके सन्तान को जन्म दे सकती है। इसी प्रकार भव्य जीव प्रयत्न करने पर शुभ सामग्री से मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

अभव्य— विवाहिता बन्ध्या स्त्री है, पति का योग है, पर शारीरिक अवस्था ठीक न होने के कारण पुत्र जन्म देने मे असमर्थ है। इसी प्रकार अभव्य जीव प्रयत्न करने पर भी स्वयं को मुक्त नहीं कर सकता है।

जातिभव्य— बाल संन्यासिनी स्त्री में संतान उत्पत्ति की शक्ति है, पर संन्यासधर्म स्वीकार करने से संभव नही है। इसी प्रकार जातिभव्य जीव में मोक्ष पाने की योग्यता है, पर उचित योग नहीं मिलने पर कार्य करने में असमर्थ है।

अखिल विश्व में दो प्रकार के पदार्थ उपलब्ध है, एक सजीव और दूसरा निर्जीव। मकान, कार, टेबल, किताब, पेन, आदि निर्जीव पदार्थ हैं और मनुष्य, गाय, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली सजीव पदार्थ है। सजीव वस्तु में आत्मा का अस्तित्व है, निर्जीव वस्तु में आत्मा का अभाव है। हाँ, हो सकता है, वे निर्जीव वस्तु कभी सजीव रही हो। परन्तु आज सजीवता नहीं हैं। इस प्रकार इस संसार को हम दो भागों में विभाजित कर सकते है।

(१) चेतन (२) जड़।

चेतन अर्थात जीव तत्व जिसका सविस्तार विवरण पीछे के प्रकरणों में देख आये है। अब अजीव के विषय में ध्यान देवें। मुख्य रूप में अजीव तत्व को पाँच भागों में विभाजित किया गया है।

(१) धर्मास्तिकाय (२) अधर्मास्तिकाय (३) आकाशास्तिकाय (४) पुद्गलास्तिकाय (५) काल।

छठ्ठा द्रव्य जीवास्तिकाय को माना गया है।

इस प्रकार षट्द्रव्यात्मक संसार को जैन दर्शन स्वीकार किया है। अर्थात जैन दर्शन सम्पूर्ण संसार में छः द्रव्यों का अस्तित्व स्वीकार करता है।

(१) धर्मास्तिकाय — जो व्यक्ति या वस्तु को चलने का सहयोग करें, उससे धर्मास्तिकाय कहते है।

पृथ्वी से सूर्य हजारो माइल दूर हैं। सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी में आने के लिये वर्षों लग जाते है। सूर्य का प्रकाश किसकी सहायता से पृथ्वी पर पहुँचता है? प्रत्येक व्यक्ति या वस्तु की चलने की शक्ति होने पर भी धर्मास्तिकाय के सहयोग के बिना चलने में असमर्थ है। यह पदार्थ अदृश्य और जड़ होने पर भी चलने का मुख्य सहायक है। आज का विज्ञान इस धर्मास्तिकाय को **ईथर** नाम से पहचानते है। धर्मास्तिकाय चौदह राजलोक में फैला हुआ है। यह एक अखंड द्रव्य है। इसको विभाजित नहीं किया जा सकता है।

(२) अधर्मास्तिकाय — जो व्यक्ति या वस्तु को स्थिर रहने में सहयोग करें, उससे अधर्मास्तिकाय कहते है।

अखिल विश्व के जीव या अजीव को स्थिर कहने का सहयोग यह द्रव्य करता है। अधर्मास्तिकाय भी अखंड और सम्पूर्ण लोकाकाश में व्याप्त है।

(३) आकाशास्तिकाय — जड़ और चेतन को रहने के लिए जो स्थान देता है, उससे आकाशास्तिकाय कहते है।

यह आकाशास्तिकाय चौदहराज लोक और इसके बाहर भी है। चौदह राजलोक के अन्तर्भाव को लोकाकाश कहते है और बाहरी भाग को अलोकाकाश कहते है। इसका रूप, रस, गन्ध, स्पर्श नहीं है। यह अरूपी द्रव्य है। गति और स्थिरता में अवकाश (स्थान) आकाश ही देता है।

(४) पुद्गलास्तिकाय — जो चर्म चक्षु से दृश्यमान है। सड़न-गलन जिसका स्वभाव है। जो परिवर्तनशील है, जिसमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श है, उसे पुद्गलास्तिकाय कहते है।

दृश्यमान सड़न-गलन स्वभाव युक्त पदार्थ को पुद्‌गलास्तिकाय कहते है।

पुद् - पुरण का स्वभाव ।

गल - गलन का स्वभाव ।

हमारे इस दृश्य जगत में जितने भी दृश्यमान वस्तु है वे सभी पुद्‌गल से बने हुए है और हरक्षण परिवर्तनशील है। ये (जड़) पुद्‌गल पदार्थ ही संसार में जीवात्मा को मोहित करता है। इसके कारण ही जीवात्मा मोहान्धबनकर संसार में अनेक प्रकार का शुभाशुभ कर्म करते है। जो जीवात्मा इस पुद्‌गल संसार के वास्तविक स्वरूप को जान जाते है वही वैराग्य को प्राप्त करते है।

विश्व में छः द्रव्य में आत्मा (चेतन) को छोड़कर पाँच जड़ द्रव्य है। हमारे शरीर का रूप भी पुद्‌गल का ही चमत्कार है।

एक राजा थे। जिसके मंत्री का नाम सुबुद्धि था। मंत्री बुद्धिमान के साथ तत्वज्ञानी भी था। और राजा का परम मित्र भी था। एक बार राजा के राजमहल में भोजन समारंभ का आयोजन किया गया था, जिसमें मंत्री महोदय भी सम्मिलित हुए थे। सभी ने भोजन की खूब प्रशंसा की पर मंत्री जी तो उदास ही रहे। राजा के पूछने पर मंत्री जी ने इतना ही कहा यह भोजन सामान्य भोजन से अच्छा है अति उत्कृष्ट भोजन से सामान्य है। राजा मन ही मन सोच रहे थे आज का भोजन समारंभ का मंत्री महोदय अवश्य ही अनुमोदन करेंगे, पर मंत्री जी तो तत्त्वज्ञानी थे, मंत्री जी के उत्तर से राजा को संतोष नही हुआ। मंत्री को कुछ न बताने पर उनकी उदासीनता राजा को पसन्द न आयी।

एक बार राजा और मंत्री नगर भ्रमण में गये थे। गन्दा पानी का नाला देखकर दुर्गन्ध से राजा नाक दबाकर आगे बढ़े। मंत्री सब कुछ समझ गये, मन में सोचा राजा को शिक्षा देनी चाहिए। घर पहुँचकर गन्देनाले का पानी पिलाये। राजा पानी पीकर बड़े खुश हुए। कहा– यह अमृत तुल्य पानी कहाँ से लाये हो? मंत्री बोला–राजन! अभय वचन दे तो सही बतायेगें। राजा के अभय वचन मिलने पर मंत्री ने वास्तविक स्थिति को बताया।

मंत्री बोले–राजन! ये सभी पुद्‌गल का खेल है। संसार में कोई भला या बुरा नहीं होता है। परन्तु संग से ही उन वस्तु का रंग, रस, रूप,

स्वाद बनता है। संसार के सभी पदार्थ एक रूप में अच्छा तो अन्यरूप में खराब है। संसार के सभी पदार्थ परिवर्तनशील है। ये पुद्गल द्रव्य रूपी पदार्थ है। अर्थात पुद्गल चर्मचक्षु से देखा जा सकता है। इनमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श गुण होता है। आज वैज्ञानिक जिस परमाणु को स्वीकार किया है, जैन दर्शन के भौतिक विज्ञान में इससे भी सूक्ष्म परमाणु का वर्णन है। अनेक परमाणु के संग्रह को ही हम चर्प चक्षु से देख सकते है।

इस पुद्गल को हम चार भागों में विभाजित कर सकते है।

(१) स्कन्ध (२) देश (३) प्रदेश (४) परमाणु।

(१) स्कन्ध	—	वस्तु का सम्पूर्ण क्षेत्रफल ।
(२) देश	—	वस्तु का एक बड़ा अंश ।
(३) प्रदेश	—	वस्तु का एक छोटा अंश ।
(४) परमाणु	—	वस्तु का एक अलग किया हुआ छोटा अंश

अजीव पदार्थ के १४ भेद है —

धर्मास्तिकाय	(स्कन्ध, देश, प्रदेश)	३
अधर्मास्तिकाय	(,, ,,)	३
आकाशास्तिकाय	(,, ,,)	३
पुद्गलास्तिकाय	(,, ,,)	४
काल	(,, ,,)	१
	भेद	१४

हम देख आये कि धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और आत्मा अखण्ड द्रव्य है। इसका टुकड़ा करके अलग करना संभव नहीं है। इसीलिये इनके परमाणु नहीं होते है। जहाँ तक धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय है उससे लोकाकाश और उसके अतिरिक्त को अलोकाकाश कहते है।

अस्ति = प्रदेश, काय = समूह ।

अस्तिकाय = प्रदेश का समूह ।

जीवास्तिकाय, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय आदि प्रदेश का समूह होने से अस्तिकाय कहलाता है। पाँच अस्तिकाय रूप विश्व पंचास्तिकायमय संसार कहलाता है।

काल– जैन दर्शन के मतानुसार काल एक अजीव, अरुपी द्रव्य है। व्यवहार की दृष्टि से इनमें अनेक भेद है। निश्चय से काल अखण्ड है। अविभाज्य समय को एक समय कहा जाता है।

काल की सूची

सूक्ष्मातिसूक्ष्म अविभाज्य काल	=	१ समय
असंख्याता समय	=	१ आवलिका
२५६ आवलिका	=	१ क्षुलकभव
१७.५० क्षुलकभव	=	१ श्वासोश्वास
१,६७,७७,२१६ आवलिका	=	४८ मिनट
अथवा		अथवा
६५,५३६ क्षुलकभव		१ मुहूर्त
अथवा		अथवा
३७७३ श्वासोश्वास		२ घड़ी ।
१५ मुहूर्त	=	१ दिन / १ रात
३० मुहूर्त	=	१ अहोरात्र (२४ घण्टा)
१५ अहोरात्र	=	१ पक्ष
२ पक्ष	=	१ महीना
२ महीना	=	१ ऋतु
३ ऋतु	=	१ अयन, (दक्षिणायन उत्तरायन)
२ अयन	=	एक वर्ष (१२ महीना)
५ वर्ष	=	१ युग
२० युग	=	१ शताब्दि ।

८४	लाख वर्ष	=	१ पूर्वांग
८४	लाख पूर्वांग	=	
	अथवा		
७०५६०	अरबवर्ष	=	१ पूर्व
	असंख्य वर्ष	=	१ पल्योपम ।
१०	कोड़ा कोड़ी पल्योपम	=	१ सागरोपम ।
१०	कोड़ा कोटी सागरोपम	=	१ अवसर्पिणी ।
१०	कोड़ा कोटी सागरोपम	=	१ उत्सर्पिणी ।
२०	कोड़ा कोटी सागरोपम	=	१ कालचक्र ।
	अनन्त काल चक्र	=	१ पुद्गल परावर्तन
	अनन्त पुद्गल परावर्तन	=	१ भूतकाल ।
वर्तमान काल का एक समय		=	वर्तमान काल,

भूतकाल + भविष्यकाल + वर्तमानकाल = सम्पूर्ण काल।

चतुर्थ खण्ड

हमारे आराध्यदेव अरिहंत भगवान है। राग-द्वेष अज्ञानादि संसार का मूल कारण जिन्होंने नाश किया है उन्हें अरिहंत कहते है। अन्तशत्रु को नाश करके उनके उपर विजय प्राप्त करने के कारण उन्हें जिनेश्वर भी कहते है।

जिनेश्वर परमात्मा संसार के समस्त जीवों के प्रति असीम कृपा करके भयंकर संसार में या संसार को पार करके परमशांति की उपलब्धि करने के लिए साधना मार्ग बताये हैं।

(१) सर्व विरति धर्म— सम्पूर्ण पापाचार से विराम। सभी प्रकार पाप क्रिया से मुक्त साधुधर्म-सन्यास धर्म को सर्व विरतिधर्म कहते है। इसमें संसार का सभी आरंभ-समारंभ का त्याग पंच महाव्रत (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) का पालन । रात्रि भोजन का त्याग, वे सभी प्रवृत्ति मोक्ष को लक्ष्य रखकर ही करते है। ऐसे धर्म को विशुद्ध रूप में पालन करने वाले जैन दर्शन के वचनानुसार दो-तीन या आठवें जन्म में अवश्य मुक्ति लाभ करते है। पंचमहाव्रतमय सर्व विरति रूप धर्म ग्रहण और

पालन करना सभी मनुष्य के लिये संभव नहीं है। मोक्ष की कामना वाले जीव सर्व विरति रूप धर्म पालन में असमर्थ साधक, सर्व विरति को लक्ष में रखकर देश विरति पालन करते है।

(२) देशविरति धर्म— आंशिकरूप में यथाशक्ति जो नियम पालन किया जाता है उसे देश विरति (श्रावक) धर्म कहते है। वे श्रावक श्राविका यथाशक्ति परमात्मा की आज्ञानुसार आराधना उपासना करते है।

तीन अक्षर के समूह से श्रावक शब्द बना है। जिनेश्वर परमात्मा की वाणी श्रवणकारी श्रावक यह इसका सामान्य अर्थ है। विशेष अर्थ–श्रा–जिनेश्वर भगवन्त जो कह गये है उससे सत्य और शंकारहित स्वीकार करना **तमेव सच्चं निसंकंच जं जिणेहिं पवेहि** अर्थात अरिहंत परमात्मा और उनकी वाणी पर अटूट श्रद्धा।

व–पूज्यनीय, वंदनीय, तीर्थंकर परमात्मा, उनके मार्ग का संवाहक जैन शासन के निष्ठावान प्रहरी मुनि भगवन्त और उपकारी माता-पिता गुरुजनों के प्रति विनय विवेक, समर्पणता।

क— जिनेन्द्र भाषित मोक्षदायिनी क्रिया में तत्परता, तन्मयता।

मोक्षलक्ष्मी सर्व विरति धर्म की कामना के साथ जिनेश्वर के वचनों पर श्रद्धा, देवगुरु के प्रति विवेक, जिनभाषित क्रिया करें उन्हें श्रावक कहते है।

श्रावक की दिनचर्या— सूर्योदय से ४ घड़ी पूर्व (१ घड़ी - २४ मिनिट) निद्रा त्याग करें। उक्त निर्धारित समय में जागना संभव न हो तो १ घड़ी पूर्व अर्थात २४ मिनिट पूर्व तो अवश्य ही शय्या त्याग करें। सर्व प्रथम परमतारक अरिहंत का नाम स्मरण करके विस्तर पर बैठे-बैठे १२ नमस्कार महामंत्र का जाप करें। फिर दोनों हाथ की हथेली मिलाकर हस्त दर्शन करें। दोनों हाथ का दो अंगूठा छोड़कर आठ अगुलियों के २४ भाग में २४ तीर्थंकर की मानसिक रूप में स्थापना करके दृष्टि के साधन रखकर भावपूर्वक दर्शन करें। तत्पश्चात दोनों हाथ स्वयं के मुह पर स्पर्श करते हुए घुमाये। याद रहे इसी हाथ में हमारा भाग्य अंकित है। हमारी जैसी भावना होती है वैसा ही कर्म का सर्जन होता है। इसके बाद जिस नासिका छिद्र में श्वास चलता हो, वही पैर अर्थात

दाहिनेश्वर में दाहिना पैर और बाया श्वर में बाया पैर सर्वप्रथम जमीन पर रखें। घर में उपस्थित पूज्य बड़े माता, पिता को चरण स्पर्श करके नमस्कार करें। उनकी अनुपस्थिति में उनके चित्रादि को नमन-वंदन करें। इसके बाद शोचादि से निवृत्त होकर शरीर शुद्धि के लिये खुले मैदान में खाली पैर १०/१५ मिनट शारीरिक व्यायाम करें। शौचादि क्रिया यथासंभव खुला मैदान और शुद्ध स्थान में ही करने का आग्रह रखना चाहिए। इसके बाद अपनी अनुकूलतानुसार राई प्रतिक्रमण, सामायिक स्वाध्याय, ध्यान, जाप, आदि हर व्यक्ति को अवश्य ही करना चाहिए। स्वाध्याय की क्रिया करने से मन प्रफुल्लित होता है। सुबह का प्रफुल्लित मन सारा दिन आनन्ददायी होता है।

प्रतिक्रमण— मानव मात्र भूल के पात्र

जो भूल न करे वे भगवान है,

जो भूल कर सुधारे वे इन्सान है,

जो भूल कर इकरार न करे वे हैवान है।

भूल करना मनुष्य का स्वभाविक गुण है। पर उन भूलों को प्रतिक्रमण-प्रायश्चित्त से दूर किया जा सकता है। सार्वजनिकरूप में भूलों का प्रायश्चित करने पर भूल तो नष्ट होता ही साथ-साथ भूलों की परंपरा भी नष्ट हो जाती है।

प्रतिक्रमण का अर्थ है भूल, पाप का प्रायश्चित प्रति- पीछे, कमण- हटना। अर्थात अपने द्वारा जानते अजानते आचरित कुकर्मों की आलोचना। देव, गुरु, धर्म और आत्मा की साक्षी में पापकर्म को स्वीकार करने पर क्षमा कर दिया जाता है या दण्ड का प्रमाण कम हो जाता है। उसी प्रकार देव, गुरु, धर्म और आत्मा के समक्ष भूलो को स्वीकार करने पर कर्म नष्ट हो जाता है। या रसबन्ध कम हो जाता है। सप्रवृत्ति के द्वारा धीरे-धीरे पापों के प्रति घृणाभाव उत्पन्न हो जाता है।

प्रतिक्रमण के पाँच प्रकार—

(१) राइअ प्रतिक्रमण-(रात्रि का प्रतिक्रमण) रात्रि विषयक पापदोष को दूर करने के लिए प्रातः सूर्योदय के समय पर यह प्रतिक्रमण किया जाता

है। ठीक सूर्योदय के समय वंदितु सूत्र बोला जाय इस समय प्रतिक्रमण प्रारंभ करना चाहिए। अपवाद में आवश्यक कारण होने पर रात्रि १२.३० के बाद दिन ११.३० तक प्रतिक्रमण किया जा सकता है। एक वर्ष में ३६० राई प्रतिक्रमण होते हैं।

(२) देवसिअ प्रतिक्रमण–(दैवसिक प्रतिक्रमण) दिवस विषयक पापदोष को दूर करने के लिए प्रत्याह सूर्यास्त के समय यह प्रतिक्रमण किया जाता है। सूर्यास्त के समय वंदितु सूत्र बोला जाय इस समय प्रतिक्रमण प्रारंभ करना चाहिए। अपवाद में आवश्यक कार्य होने पर दिन १२.३० से रात्रि ११.३० तक देवसिअ प्रतिक्रमण किया जा सकता है। बारह महीने में १ संवत्सरी प्रतिक्रमण, ३ चौमासी प्रतिक्रमण, २१ चतुर्दशी प्रतिक्रमण छोड़कर ३३५ देवसिअ प्रतिक्रमण होता है।

(३) पक्खी प्रतिक्रमण (पाक्षिक प्रतिक्रमण) एक पक्ष में एकबार चतुर्दशी के दिन शाम को यह प्रतिक्रमण किया जाता है। १५ दिन में विशिष्ट शुद्धि के लिए विशिष्ट रूप से यह प्रतिक्रमण होता है। तीन चातुर्मासिक (आषाढ़शुक्ला-१४, कार्तिकशुक्ल-१४, फाल्गुन शुक्ला-१४) चतुर्दशी को छोड़कर एक वर्ष में २१ पाक्षिक प्रतिक्रमण होता है।

क्रमशः

जैन दर्शन में पुनर्जन्म की मान्यता

समणी मंगल प्रज्ञा जी

ज्ञानदर्शन का भवान्तरगमन

जैनदर्शन ने पुनर्जन्म को केवल स्वीकार ही नहीं किया है, उसकी अनेक समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया है। आगम साहित्य में पुनर्जन्म से संबन्धित अनेक समस्याओं पर विचार किया गया है। मृत्यु के पश्चात् आत्मा दूसरे जन्म में जाती है, तो वह अकेली ही जाती है या उसके साथ कुछ दूसरे तत्त्व भी जाते हैं। इसी सन्दर्भ में गौतम ने भगवान् से पूछा- भन्ते! क्या (कोई) ज्ञान जन्म तक ही सीमित रहता है? क्या ज्ञान अगले जन्म में साथ होता है? क्या ज्ञान वर्तमान तथा भावी जन्म दोनों में विद्यमान रहता है। गौतम ने इसी प्रकार दर्शन, चरित्र, तप और संयम के संदर्भ में भी यही प्रश्न उपस्थित किये। भगवान् ने इन प्रश्नों के समाधान में कहा—ज्ञान और दर्शन (सम्यक्त्व)- ये दोनों इस जन्म तक ही सीमित रह सकते हैं और अगले जन्म में भी जा सकते हैं किन्तु चारित्र, तप और संयम-ये तीनों ऐहभाविक ही होते हैं। वे आत्मा के साथ नहीं जाते।[1] आचार्य महाप्रज्ञ ने इस सन्दर्भ में अपना विमर्श प्रस्तुत करते हुये लिखा है—

एक जन्म से दूसरे जन्म के मध्य में ज्ञान सत्तारूप में रहता है, अभिव्यक्त नहीं होता। वह शरीर रचना के पश्चात् नाड़ीतंत्र की रचना होगी। उदाहरण के लिए जाति-स्मृति (पूर्वजन्म की स्मृति) को लिया जा सकता है। इन्द्रिय और मन से होने वाले ज्ञान का आधारभूत कोश कर्म शरीर है। स्थूल शरीर के नाड़ीतंत्र या मस्तिष्क में उनके संवादी कोशों की रचना होती है।

जिस आत्मा में दो इन्द्रियों के विकास की सत्ता है, उसके दो इन्द्रियों की रचना होगी। इसी प्रकार तीन चार पंच इन्द्रियों की रचना भी सूक्ष्म

१. अंगसुत्ताणि २, भगवई १ / ३९-४३

शरीर के कोशों के आधार पर ही होगी। नाड़ीतंत्र या मस्तिष्क में ज्ञानकोशों की रचना की तरतमता का आधार भी कर्मशरीरगत कोश ही बनते हैं। इसे सूत्र के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–जिस आत्मा के ज्ञानावरण कर्म का जितना क्षयोपशम होता है, उसके उतने ही कोश कर्म-शरीर में निर्मित हो जाते हैं और उसके संवादी कोश नाड़ीतंत्र या मस्तिष्क में निर्मित होते हैं।

इस सारे दार्शनिक चिंतन को ध्यान में रखते हुए भगवान् ने कहा- **'ज्ञान परभविक भी होता है।'**

जैसे हमारे मस्तिष्क में वर्तमान जन्म के स्मृति कोश होते हैं वैसे ही पूर्वजन्म के स्मृतिकोश होते हैं या नहीं, यह एक जटिल प्रश्न है। आज के शरीर शास्त्री और मनोविज्ञानिक उन कोशों को खोज नहीं पाए हैं किन्तु कर्मशास्त्रीय दृष्टि से जिसमें पूर्वजन्म की स्मृति की संभावना है, उसमें उन कोशों की विद्यमानता की सम्भावना भी की जा सकती है। मस्तिष्क का बहुत बड़ा भाग मौन क्षेत्र (Silent area) या अन्धकार क्षेत्र (Dark area) है। हो सकता है उस क्षेत्र में वे स्मृतिकोश उपलब्ध हो जाए।[१]

चारित्र एवं तप के भवान्तर गमन का निषेध

ज्ञान एवं दर्शन को ऐहभविक, उभयभविक माना गया है। चारित्र, तप एवं संयम को केवल ऐहभविक ही माना गया है क्योंकि उनका अनुगमन नहीं होता है। वृत्तिकार के अनुसार चारित्र अनुष्ठान रूप होता है और अनुष्ठान शरीर में ही सम्भव है।[२] चारित्र की तरह ही संयम एवं तप भी अनुष्ठानात्मक हैं अतः ये भी इसी तर्क से ऐहभविक सिद्ध होते हैं। चारित्र, तप और संयम – तीनों ही आचरण पक्ष के तत्त्व हैं। सामायिक आदि की आराधना को चारित्र[३] और संयम[४]–दोनों कहा गया है। चारित्र एवं संयम

१. भगवई (खण्ड – १) १ / ३९–४३ का भाष्य

२. भगवती वृत्ति १/४१ अनुष्ठानरूपत्वात् चारित्रस्य शरीराभावे च तदयोगात्।

३. उत्तरज्झयणाणि २८ /३२, ३३

४. ठाणं ५/१३९

पर्यायवाची के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। तप चारित्र का ही एक प्रकार है। मोक्षमार्ग के प्रसंग में जहां मोक्षमार्ग के चार घटक तत्त्वों का उल्लेख है वहां तप का परिगणन चारित्र से अलग हुआ है[1] जहां तीन ही घटक तत्त्वों का उल्लेख है[2] वहां तप का अन्तर्भाव चारित्र में ही हो गया है।

निष्कर्ष

ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र-तीनों ही विशुद्धि रूप हैं। ज्ञान ज्ञानवरणीय कर्म का क्षय, क्षयोपशम है तथा दर्शन, दर्शनमोहनीय एवं चारित्र, चारित्र मोहनीय का क्षयोपशम है। ज्ञान एवं दर्शन जब अनुगमनशील है तब चारित्र की अनुगमनशीलता क्यों नहीं है यह समालोच्य है। इस जन्म में जो ज्ञान सीखा है, वह उस रूप में में तो अगले जन्म में जाता हुआ प्रतीत नहीं होता। यथा यहां कोई व्यक्ति डॉक्टर या इंजिनीयर है तो अगले जन्म में यह ज्ञान जैसा जहां था वैसा ही अगले जन्म में होना सम्भव नहीं है। इसका तात्पर्य यहीं है कि विशुद्धि रूप ज्ञान का ही अनुगमन हो रहा है। चारित्र कोरा अनुष्ठानात्मक ही नहीं होता। वह चारित्र मोहनीय का क्षयोपशम रूपी भी है। ज्ञान विशुद्धि यदि अनुगमनशील है तो चारित्र विशुद्धि के अनुगमन में क्या बाधा हो सकती है? एक डॉक्टर मनुष्य मरकर यदि पुनः मनुष्य बनता है और पुनः डॉक्टर बनना चाहता है तो उसे डॉक्टरी अध्ययन करना ही होगा उसी प्रकार एक चारित्र का पालक मरकर अन्य स्थान में जाता है तो नये सिरे से उसे चारित्र के नियमों को स्वीकार करना होता है। अतः ज्ञान, दर्शन का अनुगमन एवं चारित्र संयम एवं तप का अननुगमन यह एक सापेक्ष वक्तव्य ही प्रतीत हो रहा है।

पुनर्जन्म एवं आयुष्य कर्म

पुनर्जन्म का सम्बन्ध वैसे तो सभी कर्मों से है किन्तु उसका मुख्य हेतु आयुष्य कर्म उपलक्षित होता है। जिसके उदय से जीव प्राणधारण करता है

---

१. उत्तरज्झयणाणि २८ / २ नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहि।।

२. तत्त्वार्थसूत्र १ / १ सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रांणि मोक्षमार्ग : ।

वह आयुकर्म है।[1] स्थानांगसूत्र में आयुपरिणाम के नौ प्रकार प्रज्ञप्त हैं-गति परिणाम, गतिबंधन परिणाम, दीर्घ गौरव परिणाम एवं ह्रस्व गौरव परिणाम।[2] स्थानांग के वृत्तिकार ने परिणाम के तीन अर्थ किये हैं–स्वभाव, शक्ति और धर्म।[3]

जब अगले जीवन के आयुष्य का निर्धारण होता है तब उसके साथ ही जीव किस गति में जायेगा? वहां उसकी स्थिति कितनी होगी? वह ऊंचा, नीचा, तिरछा कहां जायेगा? वह दूरवर्ती क्षेत्र में जायेगा या निकटवर्ती क्षेत्र में इत्यादि बातों का भी निर्धारण हो जाता है।

आयुष्य कर्म के नौ परिणामों के द्वारा भी पुनर्जन्म के साथ इस कर्म का मुख्य सम्बन्ध है, यह स्पष्ट हो जाता है —

१. **गति परिणाम–** इसके माध्यम से जीव मनुष्य आदि गति को प्राप्त करता है।

२. **गतिबन्धन परिणाम–** इसके माध्यम से जीव प्रतिनियत गतिकर्म का बंध करता है, जैसे-जीव नरकायु स्वभाव से मनुष्यगति, तिर्यक्गति नामकर्म का बंध करता है, देवगति और नरकगति का बंध नहीं करता।

३. **स्थिति परिणाम–** इसके माध्यम से जीव भव-सम्बन्धी स्थिति (अन्तर्मुहुर्त से तेतीस सागर तक) का बन्ध करता है।

४. **स्थिति बंधन परिणाम–**इसके माध्यम से जीव वर्तमान आयु के परिणाम से भावी आयुष्य की नियत स्थिति का बन्ध करता है, जैसे-तिर्यग् आयुपरिणाम से देव आयुष्य का उत्कृष्ट बंध अठारह सागर का होता है।

५. **ऊर्ध्वगौरव परिणाम–**गौरव का अर्थ है गमन। इसके माध्यम से जीव ऊर्ध्वगमन करता है।

६. **अधोगौरव परिणाम–** इसके माध्यम से जीव अधोगमन करता है।

७. **तिर्यग् गौरव परिणाम–**इसके माध्यम से जीव को तिर्यग् गमन की शक्ति प्राप्त होती है।

८. **दीर्घ गौरव परिणाम–** इसके माध्यम से जीव लोक से लोकान्त पर्यन्त दीर्घगमन करता है।

---

१. तत्त्वार्थभाष्यानुसारिणी टीका ८ / २३, पृ. १७२ आयुर्जीवनं – प्राणधारणं यदुदयाद् भवति तदायु : ।

२. ठाणं ९ / ४०

३. स्थानांगवृत्ति, पत्र ४५३ परिणामः – स्वभावः शक्तिः धर्म्म इति ।

९. ह्रस्व गौरव परिणाम– इसके माध्यम से जीव ह्रस्व गमन (थोड़ा गमन) करता है।[१]

आयुष्य कर्म के पुद्गल परमाणु जीव में ऊंची-नीची, तिरछी-लम्बी और छोटी-बड़ी गति करने की शक्ति उत्पन्न करते हैं।

आयुष्य का बन्ध पूर्वजन्म में हो जाता है, किन्तु उसका वेदन नये जन्म के साथ ही प्रारम्भ होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि सुख-दुःख और आयु के वेदन में नया जन्म नियामक की भूमिका निभाता है। आयुष्य कर्म है तो जन्म है, जन्म है तो आयुष्य कर्म का भोग है। ये परस्पर जुड़े हुए हैं। पातञ्जल योगसूत्र में भी यह तथ्य अभिव्यक्त हुआ है- **'सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः।[२]'**

पूनर्वजन्मः स्वतः चालित व्यवस्था

पूनर्जन्म की व्यवस्था स्वतः चालित है। वह ईश्वर आदि किसी शक्ति के परतंत्र नहीं है। स्वकृत कर्म के फल विपाक के अनुसार ही जीव नरक आदि नाना स्थानों में उत्पन्न होता है। जब कर्मों से भारी बनता है तब वह अधोगामी गतियों में उत्पन्न होता है एवं जब कर्म के भार से हल्का होता है तब ऊर्ध्वगामी विशिष्ट गतियों में उत्पन्न होता है।[३] जीव जब सर्वथा कर्मयुक्त हो जाता है तब उसका संसार परिभ्रमण समाप्त हो जाता है। पुनर्जन्म की श्रृंखला टूट जाती है। अध्यात्म साधना का मूल उद्देश्य पुनर्जन्म की श्रृंखला को तोड़कर आत्मा स्वभाव में अवस्थित होना ही है।

---

१. ठाणं टिप्पण, ९ / ४०, पृ. ८८२
२. पातञ्जल योगदर्शन २ / १३
३. अंगसुत्ताणि २, भगवई ९ / १२५-१३२

जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा

श्री पृथ्वीराज जैन

जैन अहिंसा से गांधीवाद की समानता :—

जैन धर्म की तरह महात्मा गांधी भी यह विश्वास रखते है कि वास्तविक हिंसा-मनुष्य की भावना में समाई हुई है, उसके स्थूल कार्यों में नहीं। उनका कहना है, अहिंसा आचरण का स्थूल नियम मात्र नहीं है, बल्कि मन की वृत्ति है। जिस वृत्ति में कहीं द्वेष की गन्ध तक न हो, वह अहिंसा है। अहिंसा का भाव दिखाई देने वाले परिणाम में ही नहीं है, बल्कि अन्तः करण की रागद्वेष रहित स्थिति में है। (गांधी विचार-दोहन पृ० ४)

मनुष्य जीवन धारण करते हुए हिंसा से सर्वथा नहीं बच सकता, यह बात भी गांधी जी को मान्य है। आत्म कथा (भा० २, पृ. २१२) में वह लिखते है, अहिंसा एक व्यापक वस्तु है। हम लोग ऐसे पामर प्राणी हैं कि जो हिंसा की होली में फंसे हुए हैं। 'जीवो जीवस्य जीवनम्' यह बात असत्य नहीं है। मनुष्य एक क्षण भी बाह्य हिंसा किए बिना नहीं जी सकता। यदि इस हिंसा से छूट जाने का वह महान् प्रयास करता हो, उसकी भावना में अनुकंपा हो, वह सूक्ष्म जन्तु का भी नाश न चाहता हो, और उसे बचाने का यथा शक्ति प्रयास करता है तो समझना चाहिए कि वह अहिंसा का पुजारी है। उसकी प्रवृत्ति में निरन्तर संयम की वृद्धि होती रहेगी, उसकी करुणा निरन्तर बहती रहेगी।

आई हुई विपत्ति अथवा अपने पर होने वाले अन्याय या अत्याचार का मुकाबिला अहिंसक ढंग से करना ही श्रेयस्कर और हितकर है, इसके वैयक्तिक उदाहरण भी जैन इतिहास में मिल जाते हैं। भगवान् महावीर का जीवन तो ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। गजसुखमाल ने अपने सिर पर जलते हुए अंगारों के रखे जाने पर भी मन में द्वेष-वृत्ति को लेश मात्र स्थान न दिया था। अकेली ने अकेली और निर्जन स्थान में होने पर भी अहिंसक पद्धति से अपने सतीत्व की रक्षा की तथा विचलित होते हुए रथनेमि को संयम मार्ग में दृढ़ किया। सेठ सुदर्शन में समता और द्रोहवृत्ति के अभाव को देख

कर अर्जुन माली जैसा क्रूर हत्यारा भी पाप मार्ग से हट गया। जीवित अवस्था में ही खंधक मुनि की चमड़ी उतारी गई परन्तु वह अपने भावों में निश्चल रहे। आत्म-बलिदान के ऐसे अनेक उदाहरण जैन शास्त्रों में देखे जा सकते हैं। सामूहिक रूप में किसी विपत्ति का सामना अहिंसक मार्ग से किया गया हो, ऐसा उल्लेख संभवतः नहीं मिलता। महात्मा गांधी इस विषय में पथ-प्रदर्शन करने वाले महापुरुष हैं।

गांधी जी की अहिंसा का जैन अहिंसा से भेद :—

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा और जैन अहिंसा के भेद पर **गांधी जी और धर्म** पुस्तिका में पं० श्री सुखलाल जी ने बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। वे लिखते है, मेरा विचार है कि गांधी जी का जो अहिंसा झुकाव है वह जैन अहिंसा के दृष्टिकोण से बिल्कुल भिन्न है। मांस त्याग की प्रतिज्ञा दिलाने वाले यदि आज जीवित हों, (ऐसा समझा जाता है कि एक जैन मुनि ने गांधी जी को यह प्रतिज्ञा दिलाई थी) तो इस में सन्देह नहीं कि वे गांधी जी के निरामिष भोजन के आग्रह से अवश्य प्रसन्न होंगे, पर साथ ही जब वे गांधी जी को यह मानते हुए देखें कि गाय भैंस आदि पशुओं के दूध को उनके बच्चे व कट्टे के मुंह से छीन कर पी जाना साफ ही हिंसा है, तो वे इतना जरूर कहेंगे कि क्या यह भी कोई अहिंसा है? श्रीमद्राज चन्द्र जीवित हों और वे गांधी जी को बिना शस्त्र के प्रतिकार करते हुए देखें, तो वे सचमुच प्रसन्न होंगे, पर जब वे गांधी जी को ऐसा आचरण करते तथा मानते हुए देखेंगे कि जब कोई पशु मरते हुए असह्य कष्ट पा रहा हो अथवा बचने की कोई आशा न हो, तो इंजेक्शनआदि देकर उसे प्राण मुक्त कर देना भी प्रेम धर्म व अहिंसा है–तब वे गांधी जी की इस मान्यता और आचरण को कभी जैन अहिंसा नहीं कह सकते। इसी प्रकार श्रीमद् राजचन्द्र पागल कुत्तों को मार देने किंवा खेती बाड़ी का नाश करने वाले बन्दरों की हत्या को सामाजिक दृष्टि से अहिंसा मानने वाले गांधी जी को जैन अहिंसा का पोषक मानने को शायद ही तैयार हों।

इस भेद के अतिरिक्त गांधी जी के तथा जैनधर्म के दृष्टिकोण में यह अन्तर है कि महात्मा गांधी संकट उपस्थित होने पर देश में अशांति फैलने पर अथवा बाह्य आक्रमण होने की अवस्था में भी जनता और सरकार को अहिंसक मार्ग ग्रहण करने का परामर्श देते हैं जबकि जैन शास्त्र गृहस्थों को

रक्षात्मक दृष्टि से शस्त्रों का प्रयोग करने की भी अनुज्ञा देते हैं। गांधी जी ने द्वितीय महायुद्ध के समय यूरोप के राष्ट्रों को भी अहिंसा से हिटलर का मुकाबिला करने की सलाह दी थी। जैन शास्त्र उत्सर्ग और अपवाद मार्ग में भेद करते हैं। छेद सूत्रों के देखने से विदित होता है कि गृहस्थ की तो बात ही क्या, विषमस्थिति उपस्थिति होने पर अपने संघ की रक्षा करने के लिए जैन साधुओं को उत्सर्ग मार्ग छोड़ कर अपवाद मार्ग का अवलम्बन लेना पड़ता था। निशीथ चूर्णी में कालकाचार्य की कथा का वर्णन है। दुष्ट व कामी राजा गर्दभिल्ल की कैद से अपनी साध्वी बहिन को छुड़ाने के लिए वे बाहर से सैनिक सहायता लाए और युद्ध में स्वयं भी मुख्य भाग लिया। छेद सूत्रों में यहां तक लिखा है कि प्रवचन के शत्रु, संघ को परेशान करने वाले राजा का नाश कर संघ और गण की रक्षा का पुण्योर्जन करना चाहिए। जैन गृहस्थ राज्य पर आक्रमण होने की अवस्था में युद्ध में सदा भाग लेते रहे हैं।

उपसंहार :—

जैन-अहिंसा और महात्मा गांधी जी की अहिंसक दृष्टि पर हम कुछ विचार कर चुके हैं। इसमें सन्देह नहीं कि गांधी जी ने पुरातन सिद्धान्त को एक नवीन और आदर्श रूप दिया है। विश्व में स्थायी शांति उनके मार्ग पर चल कर ही हो सकती है। जब तक मानव के व्यवहार में हिंसा का कुछ भी अंश रहता है तब तक वैर विरोध का पूर्णतः नाश नहीं हो सकता। हिंसा से हिंसा शांत नहीं होती, केवल थोड़े समय के लिए दब जाती है। उचित निर्मिति मिलने पर वह पुनः अपना सर उठाती है। हिंसक दंग से प्रतिकार करने के लिए एक व्यक्ति या राष्ट्र को विरोधी पक्ष से अधिक हिंसक होना पड़ता है। व्यर्थ का जनसंहार भी होता है। युद्ध से युद्ध रुक नहीं सकता। एक युद्ध ने दूसरे युद्ध के बीज बोए है, इतिहास इस तथ्य का साक्षी है।

परन्तु आदर्श और व्यवहार में अन्तर है। अब तक मानव समाज नैतिक उत्थान के उस स्तर पर नहीं पहुंचता कि अहिंसा का व्यापक और पूर्ण पालन करना शक्य हो सकें। मेरा विचार है कि वर्तमान स्थिति में जैन अहिंसा का आदर्श अधिक व्यवहार्य है। आत्मरक्षा के ध्येय से हमें कभी सशस्त्र प्रतिकार भी करना पड़े तो उसके लिए तत्पर रहना चाहिए। साथ ही अहिंसा के आदर्श की ओर भी बढ़ते जाना चाहिए। अहिंसा का लक्ष्य

अपनाने से हम नृशंसता, क्रूरता और अमानुषिकता से बच सकेंगे। अनिवार्य अवस्था में ही शस्त्र और सेना का उपयोग होना चाहिए।

यदि आततायी, पाग़ल, विषैले और कृषि नष्ट करने वाले जानवरों की हत्या एक दृष्टि से सामाजिक अहिंसा है तो मानवता को ग्रस्त करने वाले दुष्ट और हिंस्र मनुष्यों का दमन अहिंसा की इस कोटि से बाहर नहीं हो सकता।

अन्त में इतना निवेदन और कर दूं कि आज जैन समाज अपने व्यवहार में महावीर के आदर्श से बहुत दूर होती जा रही है। हमें अपने जीवन में महावीर के नैतिक आदर्श को अधिक से अधिक परिमाण में अपनाना चाहिए। अहिंसा की गौरव गाथा के गान से ही काम नहीं चल सकता। इस समय हमें प्रेरणा देने के लिए न तो महावीर जीवित हैं, न बुद्ध और न महात्मा गांधी। हमें उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। कहते हैं एक बार अस्त होते हुए सूर्य ने एक दीपक से पूछा कि मेरे बाद संसार में प्रकाश कौन करेगा। दीपक ने धीरे से उत्तर दिया, **मुझ में जितनी शक्ति है, उसके अनुसार आपके कार्य को करता रहूंगा।** क्या ही अच्छा हो कि हम सब उस दीपक के समान अपनी शक्ति का उपयोग कर श्रद्धेय महा पुरुषों के प्रकाश की ज्योति को अमर बनाएँ।

पदम कुमार चरित्र

भारत की वीर भूमि पर धन-धान्य से समृद्धशाली एक पद्मपुर नामक सुन्दर नगर था। नगर के चारों ओर फल-फूल से लदे हुए वृक्षों लताओं से सुशोभित बाग बगीचे थे। उन पुष्पों पर भ्रमरों की श्रेणियाँ मस्त हुई मधुर शब्दों से गुंजार कर रही थी और तालाब, कुँए, वापियाँ निर्मल जल से भरे हुए लहरा रहे थे और भी मुसाफिरखाने, दानशालाएँ वगैरह से नगर की प्रसिद्धि सर्वत्र फैली हुई थी। उस नगर में राजा बलवन्तसिंह राज्य करता था। उसकी पट्टरानी का नाम सुरसुन्दरी था। उस नगर में गुणभद्र नाम का एक सेठ और उसकी भद्रा नाम की धर्म-पत्नी रहते थे और उनके पद्म कुमार नाम का पुत्र था। सेठ सेठानी बड़े ही धर्मज्ञ थे और उनका जीवन विशेष धर्म करनी में व्यतीत होता था, पर पद्म कुमार के संगत ऐसे मनुष्यों की थी कि वह जूआदि कूव्यसनों में पड़कर सेठजी के नाम को बदनाम कर रहा था। तब एक दिन सेठजी ने एकान्त में बैठ कर पुत्र को कहा, बेटा! तुम्हारी इस चाल से इस लोक में तो अपकीर्ति और पर लोक में नरकादि दुर्गति में दुःख होगा इसलिए तू इस खराब मार्ग को त्याग कर अपने कुल परम्परा से चले आये आचार-व्यवहार के मुजब आचरण करो, जिससे इस लोक और परलोक में तेरा कल्याण होगा। बेटा! तू मेरे एक ही प्यारा पुत्र है मैं तेरा हित चाहता हूँ। पुत्र ने कहा, **पिताजी! मैंने इतने दिन अज्ञानता से ऐसे मनुष्यों की संगत में फँस कर जो अनुचित कार्य किया है जिसकी तो मैं आपसे माफी चाहता हूँ। आप भरोसा रखें आइन्दा से मैं ऐसा कार्य नहीं करूंगा कि फिर आपको मुझे कुछ कहना पड़े।** पुत्र के कहने पर पिताजी ने विश्वास कर लिया जिससे सेठजी को अच्छा सन्तोष हो गया।

पद्मकुँवर ने और तो सब दुर्व्यसन छोड़ दिया पर एक जूआ का व्यसन उससे नहीं छूटा। इस पर विचार कर कुँवर ने देश छोड़ कर विदेश में जाने का निश्चय किया, पर साथ में यह भी विचार किया कि मेरे पिता आज्ञा नहीं देंगे। अतः उसने बिना किसी को खबर दिए पिछली रात्रि में उठकर प्रस्थान कर दिया और उस समय उसको शकुन बहुत अच्छे हुए,

पद्मकुँवर चलकर बारह कोस के फासले पर जोतीपुर नगर में उसकी जहाँ बहिन परणाई थी, उस नगर में आया और चलकर बहिन के पास गया। बहिन ने भाई को अकेला बिना कारण आया देख विचार किया और पूछा कि भाई इस समय तुम्हारा आना कैसे हुआ? भाई ने कहा, बहिन मैं विदेश जा रहा हूं मार्ग में अनायास ही तुम्हारा नगर आ गया जिससे मैं मिलने को आ गया हूं। बहिन ने पूछा भाई तुम्हारा विदेश जाने का कारण क्या है, पिताजी के पास द्रव्य पुष्कल है और तू एकाएक पुत्र है, मैं तेरे विवाह की राह देख रही थी मुझे तो लगता है कि तू माता पिता को बिना पूछे रोष में आकर विदेश जा रहा है। यह बात ठीक नहीं है। फिलहाल तू यहां ठहर मैं पिताजी को आदमी भेज कर खबर दे दूँ। इस पर भाई ने कहा कि बहिन न तो पिताजी को खबर देने की जरूरत है और न मैं यहाँ ठहरूँगा। मैं कल यहाँ से चला जाऊँगा। यदि तू ठीक समझे तो मार्ग के लिये कुछ खाद्य पदार्थ बनादे। बहिन के दिल में इतनी उदारता नहीं थी पर इन्कार भी नहीं किया। अतः उसने कुछ ज्वार, बाजरी के टुकड़े बना कर दे दिये। भाई सुबह जल्दी उठकर रवाना हो गया। वह चलकर चार कोस गया। वहां एक पानी का तालाब आया तब एक वृक्ष के नीचे बैठकर भोजन देखा जो अपनी जिंदगी में कभी नहीं खाया था, पर इस वक्त दूसरा क्या उपाय था? किन्तु वह सोचने लगा कि बहिन के घर धनवान होने पर भी उसने मेरे लिये ऐसा भोजन मेरे साथ दिया इसका कारण यही हो सकता है कि मैंने बहिन को कुछ भी अर्पण नहीं किया, ठीक संसार में स्वार्थ से ही आदर होता है। इस विचार में बैठा था कि उधर से युगल मुनि जंगल की ओर से आ रहे थे जिनको देखकर पद्मकुँवर की आत्मा में बड़ा ही हर्ष हुआ। आनन्द से उसकी आत्मा एकदम प्रफुल्लित हो गई। वह उठ कर मुनियों के सामने गया और उन्हें जाकर वृक्ष के नीचे ले आया। बाद वन्दन कर आहार का आमन्त्रण किया–मुनि तीन दिनों के भूखे प्यासे, मार्ग भूले हुए आये थे पर पद्म के दिल में इस बात का विचार था कि यह ज्वार बाजरी के टुकड़े मैं मुनि को कैसे दूँ पर वह इस समय करता भी क्या मुनियों से अर्ज की प्रभो! मुझे ऐसा आहार देने में शरम आती है, पर यदि आपके काम आता हो तो कृपा कर मुझे लाभ दिलावे? मुनि ने कहा कि आप मुसाफिर हो तुमको भोजन करना होगा? पद्म ने कहा कि गुरुदेव मेरा ऐसा भाग्य कहां है मैं तो आपके दर्शन से ही तृप्त हो गया हूँ आप तो कृपा कर लीजिये। मुनि ने

शरता-२ कहा पर पद्म ने तो उस हर्ष में एवं आनन्द में उत्कृष्ट भावना से जो टुकड़े थे वे सब के सब मुनि को प्रदान कर दिये। मुनि ने कहा **श्रावक तुम्हारे लिये कुछ भी नहीं रखा** उसने कहा **गुरु महाराज मैं तो अनन्तकाल से खाता आया हूं आज मैं मेरी आत्मा को अहोभागी समझता हूं। बस!** पद्म ने मुनि से उपवास के पचक्खाण ले लिया उसके हृदय में हर्ष समाता नहीं था। मुनि ने एकान्त में बैठ कर अपनी क्रिया करली बाद में आहार किया। बाद पद्म-मुनि के पास गया मुनि ने धर्म उपदेश दिया जिसमें ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया और पद्म को कहा तुम परस्त्री गमन त्याग करलो। उसने सहर्ष परनारी गमन का एक करण एक योग से पचक्खाण कर लिया। बाद इधर तो मुनि ने विहार किया तब उधर पद्म ने मुनि को वन्दन कर अपने मार्ग की ओर प्रस्थान कर दिया। पद्म ने अपनी बहिन का महान उपकार माना कि यह सब उसका ही प्रभाव है कि मुझे इतना लाभ मिला है।

पद्मकुँवर चलता चलता जा रहा था। उम्मीद थी कि किसी ग्राम या नगर में जाकर विश्राम लूँगा। पर एक तो भूखा था दूसरा थका हुआ भी था अतः सूर्यास्त होने पर उसने एक पर्वत के पास योग्य स्थान देख कर रात्रि में विश्राम ले लिया। पर वह थका हुआ था, निद्रा आ गई, करीब आधी रात्रि के समय एक पुरुष आया और बोला कि पद्मकुँवर आज तुमने मुनि को दान दिया है जिसके लिये तुम एक लक्ष मोंहरे हम से ले लो और उस दान का फल मुझको दे दो। जिससे तुमको प्रदेश जाने की भी जरूरत नहीं रहेगी। यहां से ही घर को लौट जाओ। पद्मने सुनकर कहा कि तुम कहां से आये हो कि मेरे किये हुए दान को मूल्य में लेने की बात कहते हो। बाद में उस मायावी पुरुष ने कहा कि यदि तुम हमारा कहना नहीं मानोगें तो देख यह मेरा चमकती तलवार तेरा खण्ड २ कर देगी जिससे दान का फल तो दूर रहा परन्तु आर्त रौद्र ध्यान में मर कर दुर्गति में जायेगा। वरना मेरा कहना स्वीकार करले। पद्म ने कहा तू कोई अनार्य पुरुष दीखता है। क्या? दान पुण्य मूल्य में दिया लिया जा सकता है? यदि तेरी भावना हो तो जहाँ योग मिले वहाँ सत्पात्र में दान कर के लाभ हासिल कर इत्यादि कह कर पद्म सो गया। तत्पश्चात् दो घण्टा के बाद एक नवयुवा सरूपवान स्त्री आई और पद्म के पास जोर जोर से रुदन करने लगी जिससे पद्म जागृत हो देखे तो सोलह श्रृंगार सजी हुई एक स्त्री खड़ी है। उसके पूछने पर वह कामनी बोली हे आर्य! मैं एक अच्छे

खानदान घराने की महिला हूँ पर आज पहली रात्रि में मेरे पति ने मेरा तिरस्कार कर मुझे निकाल दिया है मैं कामाग्नि से तप्त हूँ एवं तुम्हारे शरणे आई हूं आप मुझको स्वीकार कर मेरी कामाग्नि को शान्त करो। मैं तमाम जिन्दगी आपकी चरण किंकरी बनकर बिताऊँगी। कुमार पद्मने कहा **हे स्त्री! मेरे तो परनारी त्याग है तू तेरे पति के पास चली जा और उसकी आज्ञा का पालन कर यदि तू अच्छे खानदान की है तो तुझे शरम आनी चाहिए कि पर पुरुष की अभिलाषा करे** इत्यादि इस पर वह स्त्री उस वीर के नजदीक आकर कहने लगी कि यदि आप मेरी आशा पूर्ण नहीं करोगे तो मैं आपके सामने ही आत्मघात कर मर जाऊंगी जिसका पाप आपको ही लगेंगे। यदि आपको पर स्त्री से त्याग है पर मैं तो आपकी स्त्री बनती हूँ फिर पाप किस बात का है। इसमें तो मेरी आत्मा आपको आशीर्वाद देगी जिससे आपको बड़ा भारी पुण्य होगा। पद्म ने कहा तू मेरे सामने से चलीजा, कारण तेरे जैसी पर पुरुष की इच्छा करने वाली नारी को हजार वार धिक्कार है। इस पर उस स्त्री ने महाभयंकर पिशाच का रूप बनाकर उस वीर को डराने के लिये बहुत प्रपच्च किये पर वह तो सोने की तरह शुद्ध एवं निर्मल होता गया। इस पर उस नारी ने अपना असली देवी का रूप बना कर पद्म के पैरों में गिर कर कहने लगी कि, हे वीर! मैंने तेरी परीक्षा लेने के लिये ही दान का फल मांगा तथा ब्रह्मचर्य की परीक्षा की पर धन्य है! तू एक दिन के मुनि संगत से धर्म में इतना मजबूत बन गया और हे कुंवर! तुझ को इस युवक अवस्था में अपना व्रत पालन में इतना पक्का देख मैं प्रसन्न हुई हूँ जो चाहे वही मांग, मैं वरदान देती हूँ? इस पर पद्म ने कहा, हे देवी! मुझे मेरे तकदीर पर पूर्ण विश्वास है आपसे कुछ भी नहीं मांगना है तथा इतना ही कहना है कि किसी धर्मात्मा के धर्म एवं व्रत नियम न छुडाना पर उसकी रक्षा करना कारण देव योनि भी पूर्व भव के व्रत नियम से ही मिलती है।

देवी ने कहा, **तथाऽस्तु।** पर आप मेरे से कोई भी वर मांगें कारण देव दर्शन खाली नहीं जाता है। फिर भी उसने कुछ भी नहीं मांगा। तब देवी ने आकाशगामिनी, रूपपरिवर्तन करने की, विषादि रोगहरन और जलतरन आदि चार विद्याएँ देकर उनका मन्त्र और साधना बतला दी। श्रेष्ठि पुत्र ने उपकार के साथ स्वीकार कर लिया साथ में उसने सोचा कि एक दिन में एक व्यसनी आदमी घर से एकला निराधार निकला था पर कल्याण हो मेरी बहिन का कि जिसने मुझे ज्वार बाजरी के टुकड़े दिये उसका मुनि को दान देने का

यह फल है कि इस भव का फल इस भव में हाथोहाथ मिल गया अतः अब इन विद्याओं द्वारा भी मुझको सुकृत करके पुण्य संचय जरूरी करना चाहिए। ऐसे विचार से पद्मकुँवर रवाना हो कर क्रमशः चलता हुआ देव पट्टन नगर के उद्यान में आकर ठहरा। मालिन ने सत्कार किया। बाद पद्मकुँवर ने मालिन से कुछ सामान मँगवा कर एकान्त में जा कर आठ दिनों में विद्याएँ साधन करली। तत्पश्चात् उसी दिन वहीं के राजा देवपाल का पाटवी हस्ती पानी के कीचड़ में फँस गया था जिसको निकालने के बहुत उपाय किये पर सफलता न मिली। तब राजा ने उद्घोषणा करवाई कि जो कोई व्यक्ति मेरे हस्ती को निकाल दे वह सवालक्ष द्रव्य इनाम पावेगा। नगर में किसी ने बीड़ा नहीं उठाया इस हालत में पद्मकुँवर ने अपनी विद्या की परीक्षा करने के लिये बीड़ा उठा लिया, तब राजा ने उसको बुलवा कर सत्कार के साथ सब साधन प्रदान करने को कहा पर पद्मकुँवर ने अपनी विद्या के जरिये पानी दूर कर हस्ती को निकाल दिया जिससे राजा ने खुश होकर सवालक्ष रुपये और शिरोपाव भी दिया। तब कुँवर ने कुछ द्रव्य तो मालिन को दिया तथा कुछ अपने पास रख कर शेष द्रव्य को गरीब, अपंग लोगों को वितरण कर दिया जिससे उसका नाम नगर में प्रसिद्ध हो गया तथा राजा ने भी सुनकर बहुत आहार सम्मान देकर एक मकान ठहरने को दे दिया। वह वहाँ रह कर अपनी दूसरी विद्या से वहाँ के बीमार लोगों का रोग मिटाने लगा।

जब पद्म कुँवर अपनी तीसरी विद्या का भी प्रयोग करने के लिये आकाश गमन कर दूसरे दूसरे नगर एवं तीर्थों की यात्रा करने को आने जाने लगा। पोलासपुर नगर के राजा पृथुसेन की रानी चम्पकमाला की पुत्री शीलमंजरी पुरुषद्वेषिनी थी। वह पुरुष का मुँह देखना तो क्या पर पुरुष का नाम सुनना भी नहीं चाहती थी। जिसको पद्मकुँवर ने सुना तब उसने एक सुवटी का रूप बना कर उस कन्या के महल में गया और राज कन्या को मनुष्य की भाषा में कहा कि अरे कन्या तुमने यह क्या ढोंग मचा रखा हैं? कन्या ने कहा तू कौन है? मैं एक सुवटी हूँ तुमको सद्बोध देने को आई हूं कि तू युवा भोग भोगने, काबिल हुई है। व्यर्थ जन्म क्यों गंवाती है। हाँ वास्तव में पुरुष बुरे हैं तो मुझे भी समझा दे कि मैं भी तेरे माफिक नाम सुनना त्याग दूँ तब उस कन्या ने कहा। हे बहन! पूर्व भव में मैं एक हथिनी थी। मेरा पति और मेरे दो बच्चों के साथ हम कजली बन में रहते थे। वहाँ वंश झाड़ी में अग्नि लगी तब मैंने हस्ती को कहा कि तुम पानी लाओ वरन् यह बच्चे जल

जाँयेगे। दगाबाज एवं कृतघ्नी हस्ती पानी लाने को गया पर वापिस नहीं आया और मैं अपने दोनों बच्चों के साथ आग में जलकर भस्म हो गयी। जिससे मैं तो यहाँ उत्पन्न हुई हूँ। मेरे बच्चे कहाँ गये होंगे? इस लिये मुझे पूर्व भव में पुरुष पर द्वेष था और अब भी इस विश्वासघाती पुरुष नाम पर मेरा द्वेष है? इस पर सुवटी ने कहा राजकन्या! तुम्हारा कहना तो सत्य है पर तेरे जलने के बाद क्या हुआ? वह तुझे मालूम नहीं है पर बाद की सब बात मैं जानती हूँ तब राजकन्या ने कहा यदि तू जानती है तो बता बाद में क्या हुआ? सुवटी ने कहा कि तेरे जल मरने के बाद एक जंगल में लकड़ियां काटने वाला कठिहारा वहाँ आया था। बाद में हस्ती एक बड़ा कलश लेकर आया पर स्त्री बच्चों को जला हुआ देख उसने बहुत विलाप किया। बाद में वह खुद आग में जलने लगा तब कठिहारा ने कहा रे हस्ती! मैंने सुना है कि पुरुषों के पीछे उनकी स्त्रियां सतियां हुई है पर स्त्रियों के पीछे पुरुषों को सत्ता होना न तो कहीं देखा और न कभी सुना है। हे हस्ती यदि तू यह नया रिवाज चलावेगा तो भविष्य में हजारों पुरुष स्त्रियों के पीछे जल मरेंगे कारण लोग भेड़ वादी होते हैं अतः हे भाई, इस मिथ्या आग्रह को छोड़ कर तू दूसरी हथिनी से यारी करले इत्यादि उसके वचन सुन कर हस्ती कुपित होकर बोला कि अरे मूर्ख कठियारा मैं तुम्हारे जैसा कृतघ्नी नहीं हूं कि जो केवल अपने स्वार्थ की ही प्रीति रखता हो। मेरी हथिनी मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारी थी। मैं उसके बिना क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकता हूं। क्या करूँ मैं पानी के लिये दो तीन जलाशय (तालाब) पर गया किन्तु वहां पानी नहीं था तब पुनः एक कुँए पर गया। वहां एक नारी ने पानी से कलश भर कर रखा था मैं उस कलश को सूँड में उठा कर शीघ्र चाल से चल कर यहां आया पर मेरा दुर्भाग्य है कि मेरी स्त्री और बच्चे जल गये। हाय! मेरी स्त्री। हाय मेरे बच्चे! अरे अब मैं जीवित रहकर क्या करूँ? ऐसा कहता हुआ उस कठियारा के बरजते बरजते कूद कर हथिणी! हथिणी! करता हुआ अग्नि में गिर पड़ा। सुवटी की बात सुनकर राजकन्या के शरीर में पुरुष के प्रति जो द्वेष था वह चोरों की तरह पलायन हो गया और कहने लगी। सुवटी! तू मेरी धर्म की बहिन है। तूने मेरे ऊपर महान् उपकार किया है। इतने दिन मेरी अज्ञानता थी कि मैं पुरुषों के प्रति द्वेष रखती थी। जब मेरा पति हस्ती मेरे लिये अग्नि में जल गया तब मेरा पति मुझे कैसे मिल सकता है? फिर राजकन्या ने सुवटी को पूछा, क्यों बहिन तू जानती है कि मेरा पति मर कर कहां उत्पन्न हुआ होगा और मेरा उनका

मिलाप कैसे हो सकेगा? सुवटी ने कहा बहिन, मैं जानती हूँ कि तेरा पति से मिलाप कैसे हो सकेगा? तेरे मिलाप का उपाय यह है कि तू अपने लिये स्वयंवर कर, मैं तेरे पति को लाकर स्वयंवर में हाजिर कर दूंगी राजकन्या ने कहा कि मैं उसको किस तरह पहिचान सकूँगी? इस पर सुवटी ने कहा कि उसके वस्त्र पर हस्ती सा चिन्ह देख कर वरमाला डाल देना। तेरा पति तुझे मिल जायेगा। इतना कहकर सुवटी अपनी पांखों फर फराहट करती हुई•महल से निकल कर अपने अपने स्थान पर आकर असली (मर्द) वेश से अपना काम करने लगा। पहले तो उसने अच्छे कारीगरों को बुलवा कर एक कीमती बढ़िया वस्त्र पर रेशमी तथा सुवर्ण तारों से और मुक्ताफल का एक मनोहर हस्ती बनाया।

इधर राजकन्या शीलमंजरी ने अपनी धाय माता को बुलाकर एकान्त में कहा कि मेरे लिये स्वयंवर की रचना करावो, मैं शादी करूँगी? इस बात को सुन धाय माता को बड़ी खुशी हुई। उसने रानी को और रानी ने राजा को कहा। तब सब को बड़ा ही हर्ष हुआ कारण कन्या वर योग्य हो जाने से उन लोगों को बड़ी भारी चिन्ता हो रही थी कि कन्या पुरुष नाम से ही द्वेष रखती है तो इसकी शादी की तो बात ही कैसे की जाय। पर जब सुना कि बाई स्वयं शादी करना चाहती है तब तो आनन्द की सीमा भी नहीं रही। बस राजा ने ज्योतिषियों को बुलाकर लग्न के शुभ दिन का निश्चय कर बड़े बड़े राजा महाराजाओं को आमन्त्रण पत्रिकाऐं भिजवादी और इधर स्वयंवर के लिये आलीशान मण्डप तैयार करवाया। बाद समय पर बहुत से राजा और राजकुँवर उपस्थित हुए। जिनका सुन्दर सम्मान किया और ठीक समय पर सब राजादि मंडप में अपने अपने आसनों पर विराजमान हुये। एक आसन पर पद्मकुँवर भी सजधज कर जा बैठा। वस्त्र पर हस्ती का चिन्ह था ही। उधर से राजकन्या शीलमंजरी ने योग्य वस्त्र भूषण से सजधज हो कर स्वयंवर मंडप में प्रवेश किया। तब तो राजादिकों को ऐसी भ्रांति होने लगी कि यह कोई विद्याधरी या देवकन्या है, नागकन्या है या साक्षात सरस्वती है। अर्थात शीलमंजरी मानों शील की एक प्रति मूर्ति ही थी। जिन राजाओं को देख देख गुजरती थी उनके मुँह राहु की तरह श्याम पड़ जाते थे, जब अगले राजा आशा के किले बना रहें थे तब राजकन्या ने पद्मकुँवर के पास आकर वस्त्र पर हस्ती का चिन्ह देखा तो पहिचान लिया कि मेरा पूर्व भव का यही पति है, उसके कण्ठ में वरमाला सुशोभित कर दी। तब शेष

राजाओं ने सोचा कि यह किस देश का नरेश है जब उसको किसी ने नहीं पहचाना तो सबने एक आवाज से पुकार की कि निकाल लो वरमाला, पर राजकन्या ने कहा कि मैंने सावधानी से वरमाला डालकर वर वर लिया है। स्वयंवर के नियम से किसी को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। बस फिर क्या था? कन्या के पिता ने स्वीकार कर लिया। तब सब राजाओं का आदर सत्कार कर उनको विदा किये बाद शीलमंजरी का विवाह पद्म कुँवर के साथ बड़े ही सामारोह एवं धूम धाम से कर दिया। कर मोचन में राजा ने हस्ती, अश्व, रथ, पैदल, माणक, मुक्ताफलादि बहुत सा द्रव्य एवं मकान वगैरा दिये। जब वे दम्पति एक शय्या के अन्दर गये तब वार्तालाप में कुँवर ने कहा कि परमेश्वर की कृपा से पूर्व भव में भी अपने दम्पति संबंध था और इस भव में भी वही संबंध आ मिला है। राज कन्या ने कहा प्राणेश! पूर्व भव में आप कौन थे? पद्मकुँवर ने पूर्व भव में हस्ती हथिणी की कथा कह सुनाई जो सुवटी ने कही थी, जिससे राजकन्या को पूर्ण विश्वास हो गया कि यह मेरे पूर्व भव का पति है। अब तो आनन्द के साथ पदम कुँवर राजकन्या शीलमंजरी के साथ पंचेन्द्रिय के सुख भोगता हुआ जैनधर्म, जैन मुनि और अपनी बहिन का उपकार मानने लगा।

क्रमशः

आत्मा की खुराक-सामायिक

जिस तरह शरीर का पोषण करने लिये खुराक की जरूरत होती है ठीक उसी प्रकार आत्मा के पोषण के लिये भी खुराक की जरूरत होती है। यदि शरीर को खुराक न मिले तो शरीर निर्बल व तेजहीन हो जायेगा, उसी तरह आत्मा भी खुराक के अभाव में तेजहीन हो जायेगी। आत्मा की खुराक के अभाव में व्यक्ति का आत्मबल कमजोर हो जायेगा। जिस तरह शरीर की खुराक अन्न है, आत्मा की खुराक हैं--सामायिक । सामायिक समभाव व सत्य की उपासना है। सामायिक जीवन में से अन्धेरे को हटा जीवन को उजाला प्रदान करती हैं। सामायिक आकुलता रहित जीवन जीने का मूल मंत्र है। संसार में जितने भी दुःख दर्द, क्लेश, रगड़े-झगड़े व विषमताएं है, वे सब समभाव धारण करने से ही दूर होते है। सामायिक समभाव की ही साधना हैं। जैसे-जैसे जीवन में समभाव बढ़ते है वैसे वैसे जीवन के दुःख, सुखों में बदलने शुरू हो जाते हैं। इस तरह सामायिक से जीवन की विषमताएँ समता में बदल जाती हैं। सामायिक जीवन के उत्थान का अमोध उपाय है, इसे हम निम्न शिर्षकों में अध्ययन कर सकते है।

(१) चित्त स्थिर करने का आधार-सामायिक

सामायिक चित्त को स्थिरता प्रदान करती है। सामायिक के समय व्यक्ति एक जगह स्थिर आसन से धार्मिक अध्ययन करता है। धार्मिक अध्ययन से व्यक्ति की चित्त शक्ति शान्ति व स्थिरता को प्राप्त करता है हो सकता है, शुरुआत में चित्त की स्थिरता कम रहे परन्तु नियमित सामायिक से चित्त की स्थिरता बढ़ती जाती है। यह सामायिक ही है जो व्यक्ति को सिद्ध भगवान बना देती है। चूँकि सामायिक में व्यक्ति दुनिया के झंझटों से निवृत्त रहता है। अतः उसका दिमाग फालतू की परेशानियों से बचा रहता हैं। इस कारण व्यक्ति में राग-द्वेष की प्रवत्ति कम होती जाती है। राग-द्वेष की कमी

व्यक्ति के चित्त को स्थिरता व शांति प्रदान करती हैं। स्थिर चित्त वाला व्यक्ति ही जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति को प्राप्त करता है।

(२) सामायिक से समभाव की प्राप्ति

सामायिक शब्द में दो पद सम व आय शामिल है। सम से अर्थ समता व आय से तात्पर्य है प्राप्ति। अर्थात् जिससे समता की प्राप्ति हो वह सामायिक है। सामायिक लाभ, हानि, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा व मान-अपमान से समभाव रखना सिखाती है। सामायिक की साधना से शत्रु, मित्र, संपति-विपत्ति हरेक के प्रति समभाव रहने लगता है। सामायिक से प्राप्त समभाव सामायिक के बाद भी व्यक्ति के जीवन तथा उसकी हर प्रवृत्ति में झलकना चाहिये। जिस प्रकार फूल की सुगन्ध तुरन्त महसूस हो जाती है। उसी प्रकार सामायिक साधक के जीवन में भी समभाव का गुण महसूस होना चाहिये। सामायिक साधना का उद्देश्य ही समभावों की प्राप्ति करना हैं। अब यदि सामायिक करते हुये भी व्यक्ति के जीवन में समभाव की प्राप्ति न हो तो यह व्यक्ति के स्वयं की कमजोरी समझना चाहिये न कि सामायिक की। सामायिक साधक का प्रत्येक जीव के प्रति सम दृष्टिकोण बनता है तथा मन वचन व काया संयमित रहते हैं। सामायिक से व्यक्ति के अशुभ ध्यान शुभ ध्यान में बदलते है जिससे व्यक्ति को जीवन समता को प्राप्त कर उन्नत बनता है।

(३) सामायिक सभी व्रतों का आधार

मधुमक्खी के छत्ते सभी मधुमक्खियों के बीच एक रानी मक्खी होती हैं। सभी मधुमक्खियाँ वहां तभी तक रहती है जब तक वह रानी मक्खी रहती है। यदि रानी मक्खी उड़ जाती है तो सभी मधुमक्खियाँ भी छत्ते को छोड़कर उड़ जाती है। ठीक उसी प्रकार जीवन में व्रत-नियम तथा सद्‌गुण तभी तक टिकते है जब तक जीवन में समभाव रूपी सामायिक है। इस तरह सामायिक सभी व्रत-नियमों व सद्‌गुणों का आधार है। सामायिक की साधना से ही जीवन में सद्‌गुण पनपते है तथा व्रत-नियमों में वृद्धि होती है।

व्यवहार में भी यदि हम देखे तो जो व्यक्ति नियमित रूप से सामायिक की साधना करता है उसका जीवन सामायिक नहीं करने वाले की तुलना में ज्यादा प्रामाणित व विश्वसनीय होगा। सामायिक काल में व्यक्ति जब स्वाध्याय करेगा तो उसका जीवन तो वैसे ही सद्‌गुणों से महक उठेगा तथा वह व्रत-नियम का महत्व समझ कर जीवन में उनको धारण करने का भी प्रयत्न करेगा। अब ध्यान यह रखा जाय कि सामायिक मात्र खाना-पूर्ति के लिये न होकर एकान्त रूप से आत्मा के उत्थान के लिये की जानी चाहिये।

(४) द्रव्य सामायिक और भाव सामायिक

जब तक सामायिक में मन-वचन-काया के योगों की शुद्धता न होगी तथा पूर्ण जागरूकता के भाव नहीं होंगे तो वह मात्र द्रव्य सामायिक ही होगी। द्रव्य सामायिक से तात्पर्य सामायिक साधना में तो बैठे पर भावों की विशुद्धि नहीं है। सामायिक तभी सफल कही जायेगी जब द्रव्य सामायिक भाव सामायिक बन जाये। साधक का ध्येय हमेशा द्रव्य सामायिक से भाव सामायिक की ओर बढ़ने का होना चाहिये। सामायिक में संसार की बाते न करें तथा धर्म ध्यान व स्वाध्याय में समय लगाने पर ही वह भाव सामायिक होगी। कई बार देखा जाता है कि पाँच-सात लोग इकट्ठे होकर सामायिक में भी व्यापार की या घर-परिवार की बाते करते रहते हैं। औरते तो चूल्हा-चौका की बाते या सगाई-सम्बन्ध की बातें भी कर देती है। ये सब बाते सामायिक को दूषित करती है। ऐसा करने से वह द्रव्य रूप में सामायिक है पर भाव रूप में नहीं। सामायिक का लाभ तभी मिलेगा जब भाव सामायिक होगी। यदि मन-वचन काया के योग अशुभ प्रवत्तियों में चलते रहे तो वह मात्र द्रव्य सामायिक होगी। अतः सामायिक में भावों की शुद्धता के साथ प्रत्येक प्रवृत्ति धर्म सम्बन्धी ही हो, इसका पूरा ध्यान रखा जाना चाहिये।

क्रमश

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 475-2730, 476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-55715

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA RARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

S. VIJAY CHAND
Vijay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140
(Resi) 352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 220-4779/0131/5721 .

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 220-0874/9372/221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 287-0448

In
Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharai
&
Late, Smt. Narangi Devi Kharai

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharai & Sons
21, Kali Krishna Tagore Street
Kolkata - 700 007
Phone : 233-1609, 239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord. — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism — Price : Rs.

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1
Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi
******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)
******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE:
SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Vol. XXVI No. 5 TITTHAYARA August 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225